एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) प्रथम वर्ष
अधिसत्र (सेमेस्टर)–प्रथम
प्रश्नपत्र–प्रथम (भारतीय आर्थिक विचारों का इतिहास)
वर्ष 2020–21

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- प्राचीन भारतीय आर्थिक विचारों का सिंहावलोकन कराकर व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- आर्थिक चिंतको जीवनवृत्ति एवं उनके योगदान की समीक्षा कर सकेंगे।
- स्वतंत्रता पूर्व एवं बाद में आर्थिक विचारकों के योगदान का विश्लेषण कर सकेंगे।
- आधुनिक आर्थिक विचारकों का परिचय एवं उनके योगदान का मूल्यांकन कर सकेंगे।

इकाई– प्रथम

प्राचीन भारतीय आर्थिक विचार : कौटिल्य, शुक्र, भीष्म के अनुसार अर्थ के प्रति भारतीय दृष्टिकोण, मूल्य एवं वितरण के सिद्धान्त, आर्थिक विकास के सिद्धान्त।

इकाई– द्वितीय

आधुनिक भारतीय आर्थिक विचारों का इतिहास : दादा भाई नौरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे, गोपाल कृष्ण गोखले, रमेशचन्द्र दत्त,

इकाई– तृतीय

स्वतंत्रता आन्दोलन एवं आर्थिक विचारक महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, आचार्य विनोवा भावे, भू–दान, ग्रामदान एवं अर्थ के प्रति दृष्टिकोण।

इकाई– चतुर्थ

जे. के. मेहता, पं0 दीन दयाल उपाध्याय, अमर्त्य सेन के आर्थिक विचार।

संदर्भ ग्रन्थः–

कौटिल्य : अर्थशास्त्र।

कुमारप्पा जे0सी0 : गाँधी अर्थ विचार।

गोपाल कृष्णंन पी0के0: Development of Economics Ideas in India.

घिंडियाल अच्युतानन्द : प्राचीन भारतीय आर्थिक विचारक।

चतुर्वेदी एस0एन0 : काल मार्क्स के साम्यवादी और गाँधी के साम्यवादी आर्थिक विचारों द्वारा नये समाज की रचना।

चतुर्वेदी एवं चतुर्वेदी : आर्थिक विचारों का इतिहास, सहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।

पंत जे0सी0 एवं सेठ एम0एल0 : आर्थिक विचारों का इतिहास, लक्ष्मी नरायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन, आगरा।

शुक्र : शुक्रनीति

सिन्हा वी0सी0 : आर्थिक विचारों का इतिहास, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशन हाउस आगरा।

हजेला टी0एन0 : आर्थिक विचारों का इतिहास, Anne Books Publication, New Delhi.

एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) प्रथम वर्ष
अधिसत्र (सेमेस्टर)–प्रथम
प्रश्नपत्र–द्वितीय (लोकवित्त के सिद्धान्त)
वर्ष 2020–21

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- लोकवित्त का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- व्यय एवं सार्वजनिक व्यय के महत्व का विश्लेषण कर सकेंगे।
- आय का आशय और सार्वजनिक आय के स्रोतों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- ऋण का अर्थ–सार्वजनिक ऋण की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई– प्रथम

लोकवित्त की परिभाषा, विषय क्षेत्र, सार्वजनिक वित्त व निजी वित्त में अन्तर, अधिकतम् सामाजिक कल्याण का सिद्धान्त, सार्वजनिक वस्तु निजी वस्तु, एवं मेरिट वस्तु की अवधारणा।

इकाई– द्वितीय

सार्वजनिक व्यय के सिद्धान्त, बैगनर की बढ़ती हुई राजकीय क्रियाओं का सिद्धान्त, वाइजमैन परिकल्पना सिद्धान्त, सार्वजनिक व्यय के प्रभाव।

इकाई– तृतीय

सार्वजनिक आय के स्रोतः करारोपण के सिद्धान्त, करारोपण में न्याय की समस्या, करदेय योग्यता का सिद्धान्त, करदान क्षमता, कर विवर्तन के सिद्धान्त।

इकाई– चतुर्थ

सार्वजनिक ऋणः सार्वजनिक ऋण का प्रभाव, सार्वजनिक ऋण के शोधन सर्वजनिक ऋण का भार एवं चुकाने के तरीके।

संदर्भ ग्रन्थ :–

पन्त जे0सी0 : लोक अर्थशास्त्र, लक्ष्मी नरायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन, आगरा।

भाटिया एच0एल0 : लोकवित्त, विकास पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली।

मसग्रेव : थियरी ऑफ पब्लिक फाइनेंस, एम0सी0मैग्राहिल पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

लेखी आर0के0 : लोकवित्त, कल्याणी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

सिंह एस0के0 : पब्लिक फाइनेंस, एस0चन्द्र पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

सिन्हा वी0सी0 : लोकवित्त, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशन हाउस, आगरा।

हजेला टी0एन0 : राजस्व के सिद्धान्त, एनी बुक्स पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) प्रथम वर्ष
अधिसत्र (सेमेस्टर)–प्रथम
प्रश्नपत्र–तृतीय (शोध पद्धतियाँ)
वर्ष 2020–21

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- शोध/अनुसंधान की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- परिकल्पना निरीक्षण, साक्षातकार की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- शोध अभिकल्प के विषय में जान सकेंगे।
- निदर्शन के विभिन्न प्रकारों के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई– प्रथम

अनुसन्धान का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, अनुसंधान की सामान्य प्रकृति, अनुसंधान के पद एवं प्रकार मनोवैज्ञानिक अनुसंधान का क्षेत्र एवं प्राथमिकताएं, सामाजिक अनुसंधान, अनुसंधान की आवश्यकता एवं महत्व। क्षेत्र अध्ययन क्या है? सर्वेक्षण अध्ययन एवं क्षेत्र अध्ययन में अन्तर, क्षेत्र अध्ययन के गुणदोष।

इकाई– द्वितीय

परिकल्पना : परिभाषा स्रोत, उचित परिकल्पना के निर्माण में कठिनाइयाँ, परिकल्पना के कार्य, अच्छी परिकल्पना के आवश्यक गुण परिकल्पना के प्रकार।

शोध प्ररचनायें (अभिकल्प) (Research Designs) :– शोध प्ररचना का अर्थ, शोध प्रस्ताव के प्रकार (1) अन्वेषणात्मक अथवा निरूपणात्मक शोध प्ररचना (2) वर्णनात्मक (3) निदानात्मक (4) परीक्षणात्मक, अभिकल्प के उद्देश्य।

निरीक्षण (Observation) :– अर्थ, परिभाषा, विशेषतायें, निरीक्षण के प्रकार, महत्व, सीमायें।

साक्षात्कार (Interview) :– अर्थ, परिभाषा, विशेषतायं, साक्षात्कार के उद्देश्य, साक्षात्कार के प्रकार, महत्व, सीमायें।

इकाई– तृतीय

अनुसूची (Schedule) :– परिभाषा, उद्देश्य, विशेषतायें, प्रकार, अनुसूची की उपयोगिता सीमायें, दोष दूर करने के उपाय।

प्रश्नावली (Questionnaire) :– अर्थ परिभाषा, प्रकार, विशेषतायें, महत्व, गुण, सीमायें, प्रश्नावली की विश्वसनीयता की जांच।

वैयक्तिक अध्ययन (Case Study) :– अर्थ व परिभाषा, विशेषतायें, सीमायें, महत्व।

इकाई– चतुर्थ

निदर्शन (Sampling)–अर्थ, निदर्शन प्रविधि, प्रकार, विशेषतायें, दोष।

वर्गीकरण **(Classification)**, सारणीयन **(Tabulation)**

संदर्भ ग्रन्थ :–

कपिल एच0के0	:	अनुसंधान विधियां, एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, आगरा।
कोठारी सी0आर0	:	रिसर्च मेथोडोलाजी, न्यू एज इण्टरनेशनल पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
गुप्ता एस0पी0	:	अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स, प्रयागराज।
राय पी0एन0	:	अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नरायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन, आगरा।
सिंह एस0पी0	:	सांख्यिकी के सिद्धान्त, एस0चन्द्र पब्लिकेशन।

एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) प्रथम वर्ष
अधिसत्र (सेमेस्टर)–प्रथम
प्रश्नपत्र–चतुर्थ (आर्थिक विकास के सिद्धान्त)
वर्ष 2020–21

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- आर्थिक विकास एवं संवृद्धि के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- विकास के प्रकारों की प्रारम्भिक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- आर्थिक माण्डल का अर्थ तथा इसके सम्बन्ध में विभिन्न अर्थशास्त्रियों के विचारों से अवगत हो सकेंगे।
- आर्थिक माण्डल के विभिन्न दृष्टिकोणों एवं पूंजीवाद की समस्याओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

इकाई– प्रथम

आर्थिक संवृद्धि की समस्याओं की सामान्य प्रकृति। संवृद्धि संतुलनः अस्तित्व, अद्वितीयता एवं स्थायित्व, प्रतिष्ठित विकास मॉडलः एडम स्मिथ, डेविड रिकार्डो एवं कार्ल मार्क्स।

इकाई– द्वितीय

संतुलित एवं असतुलित विकास का सिद्धान्त : रोजेस्टीन रोडान का प्रबल प्रयास का सिद्धान्त, हार्वे लीविन्सटीन का आवश्यक न्यूनतम प्रयास सिद्धान्त, असंतुलित विकास का सिद्धान्त–हर्षमैन।

इकाई– तृतीय

कीन्स का विकास मॉडल। कीन्सोत्तर संवृद्धि मॉडल : राय एफ0 हैराड (छूरी धार की समस्या), ई0 डोमर। नव–कीन्सवादी संवृद्धि माडल : काल्डोर एवं श्रीमती जॉन रोबिन्सन।

इकाई– चतुर्थ

नव–प्रतिष्ठित संवृद्धि मॉडल : सोलो, मुद्रा एवं संवृद्धि सिद्धान्त : टोबिन एवं जॉनसन। पूँजी विवाद : सैम्यूलसन बनाम श्रीमती रोबिन्सन

संदर्भ ग्रन्थ :–

झिंगनएम0एल0	:	विकास का अर्थशास्त्र एवं आयोजन, वृन्दा पब्लिशिंग प्रा0लि0।
मिश्रा जे0पी0	:	आर्थिक विकास एवं नियेाजन, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
लेखी आर0के0	:	इकोनामिक डेवलपमेंट, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
लाल एस0एन0	:	विकास का अर्थशास्त्र, शिव पब्लिकेशन, प्रयागराज।
सिंहएस0पी0	:	आर्थिक विकास एवं नियोजन, एस0 चन्द पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
सेन आर0पी0	:	डेवलपमेंट थियरी एण्ड ग्रोथ माडल्स।

एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) प्रथम वर्ष
अधिसत्र (सेमेस्टर)–द्वितीय
प्रश्नपत्र–प्रथम (पाश्चात्य आर्थिक विचारों का इतिहास)
वर्ष 2020–21

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- पश्चिम सभ्यता के देशों में आर्थिक विचारों के उत्पत्ति के सम्बन्ध में जान सकेंगे।
- परम्परावादी अर्थशास्त्रियों के दृष्टिकोण के मध्य तुलना कर सकेंगे।
- राष्ट्रवाद की अवधारणा को समझ सकेंगे।
- आधुनिक अर्थशास्त्रियों के योगदान का विश्लेषण कर सकेंगे।

इकाई– प्रथम

पाश्चात्य आर्थिक विचारः प्राचीन और मध्यकालीन आर्थिक विचारों का संक्षिप्त सर्वेक्षण, व्यापारवाद, प्रकृतिवाद।

इकाई–द्वितीय

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रः एडम स्मिथ, डेविड रिकार्डो, टामस राबर्ट माल्थस, जॉन स्टुअर्ट मिल, इतिहासवाद।

इकाई–तृतीय

नव परम्परावादी अर्थशास्त्रः मार्शल, पीगू:, जॉन मेनार्ड कीन्स, आर्थिक विचारों में अद्यतन प्रवृत्तियाँ–शुम्पीटर, जॉन राबिन्सन।

इकाई–चतुर्थ

आधुनिक आर्थिक विचारः राष्ट्रवाद, संस्थावाद, समाजवादी, अर्थशास्त्र, सीमान्तवाद दृष्टिकोण।

संदर्भ ग्रन्थ :–

कुमारप्पा जे0सी0 : गांधी अर्थ विचार।
गागुली, बी0 एन0 : इन्डियन इकोनामिक थॉट।
घिल्डियाल, अच्युतानन्द : प्राचीन भारत आर्थिक विचारक।
चतुर्वेदी एवं चतुर्वेदी : आर्थिक विचारों का इतिहास, सहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
पंत जे0सी0 एवं सेठ एम0एल0 : आर्थिक विचारों का इतिहास, लक्ष्मी नरायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन, आगरा।
सिन्हा वी0सी0 : आर्थिक विचारों का इतिहास।
शुम्पीटर जे0 एस0 : हिस्ट्री ऑफ इकोनामिक एननलिसिस।
हजेला टी0 एन0 : आर्थिक विचरों का इतिहास, एनी बुक्स पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) प्रथम वर्ष
अधिसत्र (सेमेस्टर)–द्वितीय
प्रश्नपत्र–द्वितीय (भारतीय लोकवित्त)
वर्ष 2020–21

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- भारत में राजस्व नीति एवं केन्द्र राज्य सरकारों की वित्तीय नीति के विषय में जान सकेंगे।
- भारत में कर प्रणाली की समीक्षा कर सकेंगे।
- भारतवर्ष में लोक व्यय के उद्देश्य का विश्लेषण कर सकेंगे।
- भारतीय बजट के सम्बन्ध में आवश्यक प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई– प्रथम

राजकोषीय नीति स्थायित्व एवं आर्थिक वृद्धि, उद्देश्य संघीयवित्त व्यवस्था : संघीय वित्त व्यवस्था के सिद्धान्त, वित्तीय असंतुलन की समस्या, वित्त आयोग, केन्द्र–राज्यवित्तीय सम्बन्ध।

इकाई–द्वितीय

भारतीय कर प्रणाली की विशेषताएं, प्रमुख कर, भारत में केन्द्र एवं राज्य सरकारों के प्रमुख आय के स्रोत।

इकाई–तृतीय

भारत में कर भारत में लोकव्यय, सार्वजनिक ऋण तथा घाटे की वित्त व्यवस्था की प्रवृतियाँ।

इकाई–चतुर्थ

भारतीय बजट, बजट के प्रकार तथा स्वरूप, बजट घाटे की विभिन्न अवधारणाएं, नीति आयोग।

संदर्भ ग्रन्थ :–

पंत जे0सी0	:	लोक अर्थशास्त्र, लक्ष्मी नरायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन, आगरा।
भाटिया एच0 एल0	:	लोकवित्त, विकास पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।
लेखी आर0 के0	:	लोकवित्त, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
हजेला टी0 एन0	:	राजस्व के सिद्धान्त, एनी बुक्स पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
सिन्हा बी0 सी0	:	लोकवित्त, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशन, आगरा।
सिंह एस0 के0	:	पब्लिक फाइनेंस, एस0चन्द पब्लिकेशन, नई दिल्ली

एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) प्रथम वर्ष
अधिसत्र (सेमेस्टर)–द्वितीय
प्रश्नपत्र–तृतीय (सांख्यिकी)
वर्ष 2020–21

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- अर्थव्यवस्था के मापक के रूप में निर्देशांकों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- विभिन्न मापों में सम्बन्धों को समझा सकेंगे।
- सांख्यिकी समंकों का प्रस्तुतीकरण एवं मूल्यांकन कर सकेंगे।

इकाई– प्रथम

सांख्यिकी की परिभाषा, सीमाएं एवं महत्व, रेखाचित्र, आयत चित्र केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप माध्य, माध्यिका बहुलक। अपकिरण की मापें : विस्तार, अन्तर, चतुर्थक विस्तार, माध्य, विचलन, प्रमाप, विचलन एवं लोरंज वक्र, चतुर्थक विचलन।

इकाई–द्वितीय

विषमता : विषमता की जांच, विषमता का प्रथम माप, कार्ल पियर्सन का विषमता गुणांक, विषमता का द्वितीय माप या बाउले का विषमता गुणांक।

इकाई–तृतीय

सहसम्बन्ध : सहसम्बन्ध के प्रकार, अर्थ, परिभाषा, महत्व, कार्ल पियर्सन का सहसम्बन्ध गुणांक, स्पियरमैन का कोटि सहसम्बन्ध गुणांक, प्रतिगमन विश्लेषण, सहसम्बन्ध एवं प्रतिगमन के मध्य अन्तर।

इकाई–चतुर्थ

सूचकांक : परिभाषा, प्रकार, रचना, लास्प्रे, पाश्चे, फिशर का सूचकांक, उत्क्रम्यता परीक्षण

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

Agarwal, D.R(2012) : Quantitative Methods, Vrinda Publications, Delhi.
Asthan,B.N.(2020):Sankhyakiya ke saral siddhant,S Chand,New Delhi.
Elhance, D.N.(1996), Fundamental of Statistics, Kitab Mahal, Allahabad
Sharma,J.K (2015) :Quantitative Methods: Theory and Applications, Macmillan Publishers India LTD.
Shukla,S.M.and Sahai,S.P.(2019):Sankhyakiya vishleshan,Sahitya Bhavan Publication,Agra.

एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) प्रथम वर्ष
अधिसत्र (सेमेस्टर)–द्वितीय
प्रश्नपत्र–चतुर्थ (कृषि अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास)
वर्ष 2020–21

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- अर्थशास्त्र एवं कृषि अर्थशास्त्र का महत्व तथा इनके मध्य अर्न्तसम्बन्धों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- आर्थिक विकास एवं कृषि विकास के अन्तरसम्बन्धों को समझ सकेंगे।
- उत्पादकता एवं कृषि उत्पादकता की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- ग्रामीण निर्धनता एवं उसके उन्मूलन के लिए सुझाव दे सकेंगे।

इकाई– प्रथम

कृषि अर्थशास्त्र : परिभाषा, विषयवस्तु, कृषि एवं औद्योगिक अर्थशास्त्र–व्यवस्था में अन्तर एवं सम्बन्ध।

इकाई–द्वितीय

कृषि एवं आर्थिक विकास, भारत में कृषि विपणन व्यवस्था तथा कृषि विपणन कार्यों का मूल्यांकन, विक्रय योग्य अतिरेक तथा विपणन अतिरेक का विश्लेषण, कृषि साख की समस्याएं।

इकाई–तृतीय

कृषि उत्पादन में जोखिम एवं अनिश्चितता, भारत में फसलें एवं उनका प्रारूप।

इकाई–चतुर्थ

भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था की विशेषताएं, भारत में ग्रामीण निर्धनता की समस्याएं, निर्धनता का आकार एवं आकलन, बेरोजगारी एवं निर्धनता, निर्धनता उन्मूलन के विभिन्न कार्यक्रमों का विश्लेषण, ग्रामीण विकास में कृषि क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र एवं सेवा क्षेत्र की भूमिका। भारत में ग्रामीण आर्थिक क्रियाकलाप, विश्व व्यापार संगठन एवं भारतीय कृषि, कृषि एवं विदेशी व्यापार।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

Agrawal A.N.: Indian Economics (Hindi & English).

Dutta,R. and Sundaram,K.P.M. (2010):Indian Economy, S chand Publishing,Delhi .(Hindi &English) .

Five Year Plans: Govt. of India.

Kapila, Uma (2020-21): Indian economy since independence, Academic Foundation Publishing, Delhi.

Lal, S.N. (2020): Bhartiya Arthvyavstha, Shivam Publishing House, Prayagraj .(Hindi)

Mishra, S.K. and Puri, V.K. (2020): Indian Economy ,Himalaya Publishing House,Delhi.(Hindi & English)

Singh, R. (2020-21):Indian Economy,Mc Graw Hill India,Chennai .(Hindi & English)

एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) द्वितीय वर्ष
अधिसत्र (सेमेस्टर)–तृतीय
प्रश्नपत्र–प्रथम (सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण)
वर्ष 2020–21

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- उपभोक्ता का अर्थ, आवश्यकता माँग के सम्बन्ध में नियमों एवं माँग परिवर्तन की दशाओं को बता सकेंगे।
- उत्पादन का अर्थ एवं उत्पादन के नियमों की जानकारी दे सकेंगे।
- विभिन्न बाजारों में वस्तुओं का मूल्य निर्धारण कर सकेंगे।
- उत्पत्ति के साधनों के पारिश्रमिक के सम्बन्ध में विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सकेंगे।

इकाई– प्रथम

मांग विश्लेषण :– तटस्थता वक्र विश्लेषण अर्थ एवं विशेषतायें, सीमान्त प्रतिस्थापन दर, कीमत रेखा या बजट रेखा की धारणा तटस्थता वक्र रेखा द्वारा उपभोक्ता का सन्तुलन, आय प्रभाव, प्रतिस्थापना प्रभाव तथा कीमत प्रभाव, हिक्स एवं स्लटस्की दृष्टिकोण, उपभोक्ता की बचत का तटस्थता वक्र विश्लेषण तथा उपभोग रेखा से मांग वक्र का निर्माण, उपभोक्ता के व्यवहार का प्रकट (प्रगट या उद्घाटित) अधिमान सिद्धान्त, श्रेष्ठता और सीमायें।

इकाई– द्वितीय

उत्पादन सिद्धान्त :–उत्पादन का पैमाना, सम उत्पाद रेखायें : अर्थ तथा विशेषतायें, सीमान्त प्रतिस्थापन की दर, पैमाने के प्रतिफल, समउत्पाद रेखायें तथा एक उत्पादक का सन्तुलन (अथवा साधनों का न्यूनतम लागत सिद्धान्त अथवा साधनों के संयोग का चुनाव), रिज रेखायें तथा उत्पादन की प्राविधिक सीमा। कॉब डगलस उत्पादन फलन तथा प्रतिस्थापन की लोच।

इकाई– तृतीय

मूल्य सिद्धान्त : बाजार अर्थ, वर्गीकरण, प्रभावित करने वाले तत्व, आय वक्र एवं लागत वक्रपूर्ण प्रतियोगिता एवं शुद्ध प्रतियोगिता में अन्तर पूर्ण प्रतियोगिता एवं शुद्ध प्रतियोगिता में उद्योग एवं फर्म का साम्य, एकाधिकार में साम्य की स्थिति, अपूर्ण प्रतियोगिता एवं एकाधिकृत प्रतियोगिता में अन्तर, एकाधिकृत प्रतियोगिता में फर्म का साम्य अल्पाधिकार एवं एकाधिकार में साम्य मूल्य का निर्धारण।

इकाई– चतुर्थ

वितरण का सिद्धान्त :वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त लगान का आधुनिक सिद्धान्त, ब्याज का ऋणदेय का सिद्धान्त, कीन्स का तरलता पसन्दगी सिद्धान्त, मजदूरी एवं लाभ का आधुनिक सिद्धान्त।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

आहूजा एच0एल : व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धान्त, एस0चन्द पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

झिंगन एम0एल0: व्यष्टि आर्थिक सिद्धान्त, कोर्णाक पब्लिशर्स, प्रा0लि0।

लाल एस0एल0 और लाल एस0के0 : व्यष्टि अर्थशास्त्र, शिव पब्लिशिंग हाउस, प्रयागराज।

सिन्हा वी0सी0, सिन्हा पुष्पा : व्यष्टि अर्थशास्त्र, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशन, आगरा।

एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) द्वितीय वर्ष
अधिसत्र (सेमेस्टर)–तृतीय
प्रश्नपत्र–द्वितीय (मौद्रिक अर्थशास्त्र)
वर्ष 2020–21

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- मुद्रा का अर्थ, मूल्य की माप (क्रय शक्ति) का विश्लेषण कर सकेंगे।
- मूद्रा के मूल्य (क्रय शक्ति) के सम्बन्ध में विभिन्न अर्थशास्त्रियों के मत का विश्लेषण कर सकेंगे।
- मुद्रा की क्रय शक्ति के परिवर्तन एवं मुद्रा स्फीति का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- आय के विकास एवं मुद्रा के मूल्यों में परिवर्तनों का विश्लेषण कर सकेंगे।

इकाई– प्रथम

मुद्रा का मूल्य :– अवधारणा, माप, निर्धारण : फिशर का परिमाण सिद्धान्त, कैम्ब्रिज समीकरण, कीन्स का मूल समीकरण, बचत विनियोग सम्बन्धी सामान्य सिद्धान्त।

इकाई– द्वितीय

डॉन पेटीन्किन का सिद्धान्त,मिल्टन फ्रीडमैन का सिद्धान्त टाबिन का पोर्टकोलियो बैलेन्स सिद्धान्त।

इकाई– तृतीय

मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन की दशाएंः मुद्रा स्फीति, अवधारणा, भेद, प्रभाव, मुद्रा स्फीति के सिद्धान्त।

इकाई– चतुर्थ

आर्थिक विकास एवं मुद्रा स्फीति,मुद्रा संकुचन, मुद्रा अपस्फीति, मुद्रा संस्फीति, निष्पन्द स्फीति (स्टैगफ्लेशन), फिलिप्सवक्र।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

कीन्स जे0 एम0	:	काम, धंधा, ब्याज और मुद्रा का सामान्य सिद्धान्त (अनु0)।
झिंगन एम0 एल0	:	मौद्रिक अर्थशास्त्र, वृन्दा पब्लिकेशन प्रा0लि0।
राज के0 एल0	:	मानिटरी पॉलिसी ऑफ दि रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया।
रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया	:	रिपोर्ट ऑफ करेंसी एंड फाइनेंस ट्रेडर्स इन बैंकिंग।
वैश्य एम0 सी0	:	मुद्रा की रूपरेखा।
सिन्हा बी0सी0	:	मौद्रिक अर्थव्यवस्था, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशन, आगरा।
सेठ एम0एल	:	मौद्रिक अर्थव्यवस्था, लक्ष्मी नरायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
सेटी टी0टी0	:	मौद्रिक अर्थशास्त्र।

एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) द्वितीय वर्ष
अधिसत्र (सेमेस्टर)–तृतीय
प्रश्नपत्र–तृतीय (अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धान्त)
वर्ष 2020–21

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- व्यापार का अर्थ एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के कारणों का मूल्यांकन एवं विश्लेषण कर सकेंगे।
- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धान्त के विभिन्न मॉडल का परीक्षण कर सकेंगे।
- व्यापार की शर्त का आशय एवं विभिन्न अर्थशास्त्रियों के मतों का अन्तर्सम्बन्धों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संगठन एवं अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संगठनों के योगदान की भूमिका का मूल्यांकन कर सकेंगे।

इकाई– प्रथम

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रतिष्ठित सिद्धान्त, हैबरलर का अवसर लागत, हेक्शर–ओहलिन प्रमेय।

इकाई– द्वितीय

साधन गहनता : व्युत्क्रम, स्टाप्लर और रिब्जनेस्की प्रमेय, नवीन अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धान्त–क्रेविस, लिण्डर एवं पोसनर का सिद्धान्त।

इकाई– तृतीय

व्यापार शर्त–प्रेविश, सिंगर, अन्तरण की समस्या। सीमा कर सिद्धान्त–आंशिक एवं सामान्य संतुलन विचार, अन्तर्राष्ट्रीय वस्तु समझौते।

इकाई– चतुर्थ

अन्तर्राष्ट्रीय उत्पादक संघ (कार्टेल), नव अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था, विश्व व्यापार संगठन, इष्टतम् मुद्रा क्षेत्र। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

क्रुगमैन : इण्टरेनशनल इकोनॉमिक्स।
झिंगन, एम0एल0 : अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, कोर्णाक पब्लिकेशन प्रा0लि0।
बायोसाडर्सन : इण्टरेनशनल इकोनॉमिक्स।
सोडर्सटन,बी0ओ0 : इण्टरेनशनल इकोनॉमिक्स।
सुदामा सिंह एवं वैश्य : अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा।
स्वामी, के0डी0 : अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र।
सिन्हा, बी0सी0 : अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशन, आगरा।

एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) द्वितीय वर्ष
अधिसत्र (सेमेस्टर)–तृतीय
प्रश्नपत्र–चतुर्थ (जनसंख्या का अर्थशास्त्र)
वर्ष 2020–21

ध्येय –

- मानवीय संसाधन का अर्थ एवं विकास के अर्थ सें अवगत करना।
- जनांनकीय (जनसंख्या) उपकरणों का प्रयोग एवं महत्व का मूल्यांकन करना।
- जनसंख्या के सम्बन्ध में विभिन्न जनांनकीय सिद्धान्तों का परीक्षण।
- जनसंख्या वृद्धि एवं आर्थिक संवृद्धि के बीच अर्न्त सम्बन्धों का मूल्यांकन कराना।

इकाई– प्रथम

मानवीय संसाधन विकास की अवधारणाः अर्थ, महत्व एवं प्रभावित करने वाले तत्व एवं समस्याएं।

इकाई– द्वितीय

जनसंख्या सम्बन्धी उपकरण : जनांकिकीय अनुपात–लिंग अनुपात, आश्रितता अनुपात, साक्षरता अनुपात, शिशु–स्त्री अनुपात, आयु का सूचकांक, जनसंख्यक घनत्व व प्रकार, जनसंख्या पिरामिड।

इकाई– तृतीय

माल्थस का जनसंख्य सम्बन्धी सिद्धान्त एवं नव माल्थस विचार, जनसंख्या का अनुकूलतम सिद्धान्त, जनसंख्या परिवर्तनशीलता सिद्धान्त, (संक्रमण सिद्धान्त)–प्रो0 सी0पी0 ब्लैकर थाम्पसन बोग एवं नोस्टीन के विचार, लॉण्डी के अनुसार जनसंख्या की अवस्थाएं, कार्ल मैक्स के अनुसार जनसंख्या की अवस्थाएं, डोनाल्ड ओलेन काउगिल के अनुसार जनसंख्या की अवस्थाएं।

इकाई– चतुर्थ

जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक विकास (मानवीय संसाधन), जनसंख्या प्रक्षेपण, नई जनसंख्या नीति।

अनुमोदित पुस्तकें :–

सिंहएस0पी0	:	आर्थिक विकास एवं नियोजन
झिंगनएम0एल0	:	आर्थिक विकास एवं नियोजन,कोर्णाक पब्लिशर्स प्रा0लि0
श्रीवास्तव ओ0एस0	:	जनांकिकी
सिन्हा बी0सी0	:	जनांकिकी, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशन, आगरा।
विश्वकर्मा मुन्नीलाल	:	मानव पूँजी का अर्थशास्त्र
आर्य एण्ड टण्डन	:	ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट

एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) द्वितीय वर्ष
अधिसत्र (सेमेस्टर)–चतुर्थ
प्रश्नपत्र–प्रथम (साधन कीमत सिद्धान्त एवं कल्याण का अर्थशास्त्र)
वर्ष 2020–21

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- कीमत का अर्थ एवं साधनों (उत्पादन के) के विषय में जान सकेंगे।
- रेखीय प्रोगामिंग के विषय में जान सकेंगे।
- कल्याणकारी अर्थशास्त्र के महत्व को समझ सकेंगे।
- नये कल्याणकारी एवं पुराने कल्याणकारी अर्थशास्त्र के मध्य तुलना कर सकेंगे।

इकाई– प्रथम

साधन कीमत : परम्परावादी, सीमान्त–उत्पादकता सिद्धान्त और आधुनिक सिद्धान्त। योगशीलता की समस्या–यूलर का प्रमेय, लगान, मजदूरी, ब्याज और लाभ का आधुनिक सिद्धान्त।

इकाई– द्वितीय

रेखीय प्रोग्रामिंग – अदा–प्रदा विश्लेषण, खेल सिद्धान्त।

इकाई– तृतीय

कल्याणवादी अर्थशास्त्र–नया और पुराना कल्याणवादी अर्थशास्त्र–पीगू, पैरटो, काल्डोर–हिक्स और साइटोवस्की।

इकाई– चतुर्थ

बर्गसन–सैम्यूल्सन–समाज कल्याण फलन, परेटो, अनुकूलतम की शर्तें, द्वितीय बेस्ट, ऐरो का सम्भावना सिद्धान्त।

संदर्भ ग्रन्थ :–

पीगू ए0सी0	:	थियरी ऑफ अनइम्प्लायमेण्ट।
राज के0एल0	:	मानिटरी पॉलिसी ऑफ दि रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया
सेठी टी0टी0	:	मौद्रिक अर्थशास्त्र।
सेठ एस0एन0	:	सेन्ट्रल बैंकिंग इन अण्डर डेवलपमेण्ट मनी मार्केट्स।
सिन्हा बी0सी0	:	मौद्रिक अर्थव्यवस्था, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशन, आगरा।
सेठ एम0एल0	:	मौद्रिक अर्थव्यवस्था, लक्ष्मी नरायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
हैनसन एच0	:	गाइड टु कीन्स।

एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) द्वितीय वर्ष
अधिसत्र (सेमेस्टर)–चतुर्थ
प्रश्नपत्र–द्वितीय (समष्टि आर्थिक विश्लेषण)
वर्ष 2020–21

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- रोजगार निर्धारण के सम्बन्ध में प्रस्तुत विभिन्न अर्थस्त्रियों के विचारों का तुलनात्मक परीक्षण कर सकेंगे।
- फलन का अर्थ एवं फलनों के प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- ब्याज एवं स्फीति के सम्बन्ध को समझ सकेंगे।
- व्यापार चक्र का अर्थ एवं उनकी अर्थव्यवस्था में भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे।

इकाई– प्रथम

रोजगार का सिद्धान्त : परम्परावादी एवं किन्सीयन सिद्धान्त, प्रभावपूर्ण मांग का सिद्धान्त।

इकाई– द्वितीय

उपभोग फलन : कीन्स का उपयोग का मनोवैज्ञानिक नियम, आय–उपभोग सम्बन्ध–सापेक्ष आय, निरपेक्ष आय, जीवन चक्र और आच उपकल्पना, निवेश फलन–स्वायत्त एवं प्रेरित निवेश, गुणक, पूँजी का सीमान्त उत्पादकता का सिद्धान्त, निवेश का निधारक, त्वरण सिद्धान्त।

इकाई– तृतीय

ब्याज पर सिद्धान्त : ब्याज पर परम्परावादी, नव परम्परावादी और किन्सीयन दृष्टिकोण, आईएस0एल0एम0 मॉडल, मुद्रास्फीति का संरचनात्मक और मौद्रिक दृष्टिकोण–फिलिप्सवक्र विश्लेषण–अल्पकालीन और दीर्घकालीन फिलिप्सवक्र, स्फितीक अन्तराल।

इकाई– चतुर्थ

व्यापार चक्र के सिद्धान्त : हिक्स, काल्डोर और सैम्युलसन।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

कीन्स जे0एम0	:	काम, धंधा, ब्याज और मुद्रा का सामान्य सिद्धानत (अनु0)।
कुरिहरा के0के0	:	पोस्टकीन्सियन इकोनामिक्स।
झिंगन एम0एल0	:	मौद्रिक अर्थशास्त्र, कोर्णाक पब्लिशर्स प्रा0लि0।
राज के0एल0	:	मानिटरी पालिसी ऑफ दि रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया।
लाल एस0एन0, लाल एस0के0	:	मैक्रो इकोनामिक्स, शिव पब्लिशिंग हाउस प्रयागराज।
पाल राजेश	:	इण्डियन बैंकिंग एण्ड ग्लोबलाइजेशन, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्युटर लि0, न्यू दिल्ली 2009)।
सेठी एम0एल0	:	मौद्रिक अर्थशास्त्र।
सिन्हा बी0सी0	:	मौद्रिक अर्थशास्त्र, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशन, आगरा।
सेठ एस0एन0	:	सेन्ट्रल बैंकिंग इन अण्डर डेवलपमेण्ट मनी मार्केट्स।

एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) द्वितीय वर्ष
अधिसत्र (सेमेस्टर)–चतुर्थ
प्रश्नपत्र–तृतीय (वैश्विक आर्थिक मुद्दे)
वर्ष 2020–21

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- वर्तमान समय में वैश्विक विकास के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- आर्थिक संकट और विश्व अर्थव्यवस्था की स्थिति की समीक्षा कर सकेंगे।
- उदारीकरण एवं विश्व व्यापार संगठन के योगदान के वैश्विक स्तर पर प्रभाव की समीक्षा कर सकेंगे।
- विश्व अर्थव्यवस्था एवं सूचना तकनीकी की भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे।

इकाई– प्रथम

वैश्विक विकास के ज्वलन्त मुद्दे – असमानता, गरीबी, भूख और खाद्य सुरक्षा, सहस्राब्दी (मिलेनियम) विकास के उद्देश्य, पर्यावरण प्रदूषण और वैश्विक वार्मिगः ऊर्जा संकट।

इकाई–द्वितीय

आधुनिक विश्व आर्थिक संकट, सम्पोषी विकास की समस्या और समावेशी विकास, संतुलित लैंगिक विकास के मुद्दे।

इकाई–तृतीय

विश्व व्यापार उदारीकरण, भुगतान संतुलन, आर्थिक उदारीकरण और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश।

इकाई–चतुर्थ

सूचना एवं संचार तकनीकीं की भूमिका, नीति आयोग, कोविड–19।

संदर्भ ग्रन्थ एवं पत्र–पत्रिकाएँः–

आर्थिकी	:	महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
आर0बी0आई0	:	रिपोर्ट ऑन करेन्सी एण्ड फाइनेंस।
इकोनॉमिक टाइम्स	:	नई दिल्ली।
इकोनॉमिक सर्वो	:	सांख्यिकी विभाग, नई दिल्ली।
कुरूक्षेत्र	:	सूचना मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।
टाइम्स ऑफ इण्डिया	:	नई दिल्ली।
भारत	:	2020–21, सूचना मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।
योजना	:	सूचना मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।